आज का पुरुषार्थ 22 August 2022

Source: BK Suraj bhai

Website: www.shivbabas.org

धारणा – “हमें सम्पूर्ण पवित्र जीवन .. निर्विघ्न जीवन जीना है .. तो स्वप्न भी सदा के लिए पवित्र बन जाये ”

बाबा ने हम सभी को निर्विघ्न जीवन जीने की बहुत सुन्दर प्रेरणा दी है। जो स्वयं **विघ्नविनाशक** है उनके आगे भी यदि विघ्न आयेंगे तो बाकी संसार के लोगों का क्या हाल होगा!

हम अपनी शक्तियों को पहचाने। उनकी **स्मृति** में रहे। और विघ्नों को **योगबल** से, **संकल्प** से, **पवित्रता के बल** से समाप्त करे। लक्ष्य बना ले →

वाह्य विघ्न तो भले ही आते है, लेकिन हमारी **स्थिति** में विघ्न न हो। हमारे **संकल्पों** में विघ्न न हो। हमारे अपने ही संस्कार, हमारे लिए और दुसरोँ के लिए विघ्नकारी न बने हो।

हमारे जीवन जीने का तरीका इतना सुन्दर और सरल हो कि हम छोटी मोटी बातों को सहज ही पार करते चले। उनमें किसी भी तरह की विघ्न हमें मेहसूस न हो।

विघ्न तो आते हैं। बहुत सारे विघ्न पूर्व जन्म के कर्मों के कारण आते हैं। बहुत सारे विघ्न मनुष्य के मनोविकारों के कारण आते हैं। **क्रोध** के कारण आते हैं। **लोभ** के कारण आते हैं। **अपवित्रता के कारण आते हैं।**

हम अपने **पवित्रता को मजबूत करते चले।** पवित्रता हमारा सबसे सुन्दर सबजेक्ट है। बाबा आये ही हमें पवित्र बनाने। और पवित्रता का सुख परम सुख होता है।

पवित्रता के आधार पर ही पूजा होती है। पवित्रता स्थापना की कार्य में बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। क्योंकि हम धर्म की भी स्थापना कर रहे हैं और **दैवी स्वराज्य** की भी स्थापना कर रहे हैं।

पवित्रता के द्वारा धर्म की स्थापना में बल मिलता है। और बाबा ने हम सभी को, अनेक बच्चों को पवित्र बना दिया है, **श्रेष्ठ धर्म** की स्थापना के लिए।

तो हम चेक करेंगे, हमारे अंदर **सूक्ष्म रूप** से अपवित्रता के अंश मात्र भी तो नहीं है? स्वप्न भी चेक करना है। कोई कहता है स्वप्न थोड़ा ही हमारे हाथ में होता है?

पर यदि हमारी **स्थिति श्रेष्ठ हो**, अगर हम अपनी योग **अभ्यास** पर बहुत ध्यान दे, अगर हम अपनी दृष्टि को आत्मिक बनाये, तो हमारे स्वप्न भी बहुत श्रेष्ठ होंगे।

हमारी स्वप्न की पवित्रता, हमारे वाह्य पवित्रता को प्रत्यक्ष करता है। अर्थात् अगर हम वाह्य रूप से बहुत पवित्र है, तो **स्वप्न भी पवित्र है।**

अगर हमारे स्वप्न में किसी तरह की अपवित्रता है तो हमें समझ लेना चाहिए .. आत्मा में, मन में संस्कारों में कहीं न कहीं अपवित्रता बाकी है।

तो एक तरह से स्वप्न हमारी स्थिति के दर्पण होते है। हम स्वप्न जिस तरह से देखते है, हम अपनी स्थिति को उस आधार से जांच करे।

बहुत सारे स्वप्न तो अनावश्यक होते हैं। कोई अर्थ उनका नहीं होता। उनपर हम भले न दें, परन्तु कुछ स्वप्न अवश्य हमें हमारी **स्थिति** का एक आईना दिखा देते हैं।

तो आइये हम सभी अपने जीवन को निर्विघ्न बनाये। अपने पवित्रता के प्रकाश को संसार में फैलाये। हमारे पवित्रता का प्रकाश बहुत जबरदस्त प्रकाश है। हम इसके महत्व को समझे।

और आज सारा दिन हम इस **पवित्रता** को बढ़ाने के लिए ...

" आत्मिक दृष्टि का अभ्यास करेंगे .. अशरीरीपन का अभ्यास करेंगे "

... ताकि हमारी कर्मेन्द्रियाँ भी शीतल हो जाये।

और साथ साथ **स्वमान** लेंगे ....

" मैं फ़रिश्ता हूँ .. पवित्रता का फ़रिश्ता "

अपने स्वरूप को देखेंगे ....

" मेरे अंग अंग से पवित्रता की गोल्डेन किरणें चारों ओर फैल रही है .. मैं आत्मा इस देह से बिल्कुल न्यारी हूँ "

न्यारेपन का अनुभव .....

" यह अलग देह .. और .. मैं आत्मा अलग "

और सबको भी जब देखे इस नजर से देखे .....

" यह सभी पवित्र आत्मायें है "

सारा दिन आज इसकी धुन लगायेंगे। इससे पवित्रता की **शक्ति** भी बढ़ेगी
और हमारा जीवन **निर्विघ्न** भी बनेगा।

अच्छा।

ओम शान्ति।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org